National Convention of BCC & DCC Presidents
Sunday, 8th February 2009: Ram Lila grounds, Delhi
Speech of Shri Rahul Gandhi

भाईयों, बहनों और बुर्ज़गों,

मैं आप सब का इस संगठन की बैठक में स्वागत करता हूँ। हमारे बीच बैठे कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी जी, कांग्रेस पार्टी के सब वरिष्ठ नेताओं और आप सब को मेरा नमस्कार।

सबसे पहले मैं प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी और कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ। कांग्रेस पार्टी ने जो वादे पाँच साल पहले इस देश को किये वो आपने कर दिखाये। हम सब इन वादों के बारे में जानते हैं। UPA सरकार ने इस देश के गरीबों को NREGA दिया। हर परिवार को सौ दिन का रोज़गार दिलवाया। RTI के ज़रिये हर नागरिक को अपने अधिकारों के बारे में सवाल उठाने का हक दिलवाया। आदिवासीयों को उनकी जमीन वापस दी। और कर्ज़ा माफ़ करके करोड़ों किसानों के हाथ मज़बूत किये। सब सरकारी स्कूलों में दोपहर का भोजन पहुँचवाकर देश के करोड़ों बच्चों के भविष्य को मज़बूत बनाने की कोशिश की। परमाणु करार पर हस्ताक्षर करके ऊर्जा के क्षेत्र में नई क्रांति की नींव डाली। और इन सब कार्यक्रमों पर ध्यान देते हुए भी UPA की सरकार ने भारत की आर्थिक प्रगति की रफ़्तार बढ़ा के दिखाई।

लेकिन इन पाँच वर्षों में हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि हम अपनी विचारधारा से नहीं हटे। गांधी जी कहा करते थे:

- जो सबसे गरीब आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करके अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने वाले हो, वह उस आदमी के लिए कितना फायदेमंद होगा।

गांधी जी के इन शब्दों में ही हमारी विचारधारा का सार है। UPA की सभी योजनाएँ इस नियम को लेकर बनायी गई हैं। हमारी एक ऐसी सरकार है जिसने भारत के हर व्यक्ति के लिए लगातार काम किया और विकास की धारा में सभी नागरिकों को शामिल किया।

पाँच साल से मैं राजनीति में हूँ। इन पाँच वर्षों में मैंने देशभर में दौरा किया है। जब से मुझे कांग्रेस पार्टी के Frontal संगठनों का प्रभारी बनाया गया है तब से मैंने इनके बारे में सीखने की पूरी कोशिश की है। मेरी उम्र इतनी नहीं है कि मैं यहाँ बैठे अपने बुर्ज़गों को सलाह दे पाऊँ। मगर इन वर्षों में जो कुछ मैंने देखा और सीखा है वह मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ।

मैं जहाँ भी गया वहाँ मुझे देश के युवाओं की ऊर्जा और उनकी शक्ति का एहसास हुआ। मैं यह बेझिझक कह सकता हूँ कि हमारे देश में जितनी युवा शक्ति है उसका मुकाबला दुनिया के किसी भी देश में नहीं है। भारत के कोने–कोने में इस शक्ति का प्रभाव है। और इसी युवा शक्ति में देश में खूब तेजी और आसानी से बदलाव लाने की क्षमता है। हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम इस शक्ति को ज़ाया न होने दें। देश को युवाओं की ऊर्जा की ज़रूरत है। युवाओं को देश के निर्माण और

देश सेवा में शामिल करने की ज़िम्मेदारी हमारी है। सच पूछिये तो यही मेरा लक्ष्य है कि भारत के हर युवा के दिल में देशप्रेम की भावना जागे और उस भावना को अपने देश के हित में कुछ कर दिखाने का ज़रिया मिले। यह ज़रिया उन्हें हमारे संगठन द्वारा मिल सकता है। लेकिन इसके लिये हमें अपने संगठन के बन्द दरवाज़ों को खोलना पड़ेगा।

अपने दौरों में मैं हज़ारों देशवासियों से मिला हूँ। उन्होंने खुलकर मेरे सामने अपने विचार रखे। चाहे किसी चाय की दुकान में; या U.P. के किसी पिछड़े हुए व्यक्ति के घर में; उड़ीसा के कारखानों में; या मिज़ोरम और आसाम की गलीयों में; चाहे केरल में या आन्ध्रा में; या पंजाब के किसी ढाबे में; उत्तराखण्ड के शिक्षा संस्थानों में; हर जगह यही सुनने में आया कि भारत में कोई जवाबदेही की व्यवस्था नहीं है। सभी का यह कहना था कि जनता की कम सुनवायी होती है। जनता के लिए कोई आवाज़ नहीं उठाता।

जब भी मैं युवाओं से मिला उन्होंने इसके साथ–साथ मुझे यह बात भी कही कि अगर वे रास्ता जानते; अगर उन्हें मौका मिलता; तो वे राजनीति में आने को तैयार होते। इन बाधाओं को खुद हटाते और देश को आगे बढ़ाने के लिए दिन–रात काम करके दिखाते। यह अफ़सोस की बात है। क्योंकि काम करने का जोश उनमें है। क्षमता उनमें है। आशा भी उनमें है। लेकिन उन्हें मौका कभी नहीं मिलता। राजनीति में आएँ तो कैसे? और आएँ भी तो ऐसे लगता है कि राजनीति अस्वच्छ है

उसमें आकर अपने उसूलों से कहीं समझौता न करना पड़े। युवा शक्ति का आधार उसका आदर्शवादी नज़रिया होता है। मुझे महसूस होने लगा है कि राजनीति को लेकर भारत के युवाओं के दिलों में बहुत संदेह है। मानो राजनीति और युवा शक्ति के बीच एक दीवार सी खड़ी है। उन्हें देश–सेवा और देश–निर्माण में शामिल होने से रोक रही है। हमें इस दीवार को तोड़ना है।

अपने दौरों पर मैं कई युवा राजनेताओं से भी मिलता हूँ। उनका कहना भी यही है कि कोई जवाबदेही हो तो अपने काम का उन्हें फल मिल पाये। और वे भी राजनीति में आगे बढ़ पायें। वे कहते हैं कि वे आम जनता के लिए काम करना चाहते हैं। उनकी समस्याओं को सुलझाना चाहते हैं। उनके लिए लड़ना चाहते हैं। मगर उन्हें अपने काम की कोई पहचान नहीं मिलती। आप ज़िला और ब्लॉक अध्यक्ष हैं। और आप से बेहतर इस बात को कोई नहीं जानता। आप जी भर के काम करते हो। धरना प्रदर्शन करते हो। पार्टी के लिए अपना खून पसीना देते हो। और अक्सर जब चुनाव का दिन आता है तो आपको किसी ना किसी बहाने लड़ने का मौका नही मिलता। आपके ऊपर से किसी को अवसर दिया जाता है और आप वहीं के वहीं रह जाते हो। आखिर कार्यकर्ता की एक ही पहचान होती है, उसका काम। राजनैतिक संगठनो को उस काम की इज़्ज्त करनी चाहिए। अगर हम अपने ही लोगों के परिश्रम की इज़्जत नही कर सकते तो हम जनता की समस्याओं के लिए कभी नही लड़ पायेंगे।

हमारे युवा संगठनों में दो कमियाँ हैं। पहली कमी यह है कि आम युवा इन संगठनों में आसानी से प्रवेश नहीं कर सकते। इन संगठनों से जुड़ने के लिए सिफारिश या आर्थिक बल की ज़रूरत हैं। मूल तौर पर इनके दरवाज़े आम युवाओं के लिए बन्द रहते हैं। और दूसरी कमी यह है कि जो किसी तरह संगठन से जुड़ भी जातें हैं, उन्हें संगठन में आगे बढ़ने के लिए भी सिफारिश और चापलूसी इस्तेमाल करनी पड़ती है। उनके काम का सही तरह से मुल्यांकन नहीं किया जाता। जब तक हम इन दो कमियों को खत्म नहीं करेंगे, तब तक हम भारत की युवा शक्ति का राजनैतिक प्रयोग ठीक तरह से नहीं कर पायेंगे।

पिछले साल से हम इन दो कमियों को मिटाने का काम Youth Congress और NSUI में कर रहें हैं। हमने पंजाब और उत्तराखण्ड में Youth Congress और NSUI के चुनाव करवायें। इसके लिए हमने एक नई सोच से सदस्यता करवायी है। इसे हमने खुली सदस्यता का नाम दिया। अखबारों में फार्म छपवाये ताकि कोई भी युवा इन्हें भरकर संगठन में शामिल हो सके। इसके ज़रिये तमाम युवाओं ने फार्म भरे और प्रदेश में हमारी सदस्यता चालीस हज़ार से साढ़े तीन लाख की संख्या तक पहुँच गई। इसी तरह से उत्तराखण्ड में आज 16% छात्र NSUI के सदस्य बन चुके हैं। इसके बाद हमने चुनाव करवाये जिनके द्वारा सदस्यों ने अपने संगठन और उनके नेताओं को खुद चुना। इसका नतीज़ा ये है कि पंजाब और उत्तराखण्ड में चार हज़ार युवा नेता चुनाव

के ज़रिये आगे आयें हैं। हमने इन नेताओं कों Training देने की योजना भी तैयार की है। उनका काम सही तरह से नापा जायेगा। एक–दूसरे से उनकी तुलना की जायेगी और सबसे अच्छा काम करने वालों को पार्टी संगठन द्वारा आगे बढ़ाया जायेगा। हमारी पूरी कोशिश होगी की इन काबिल युवाओं को कांग्रेस पार्टी चुनावों में भाग लेने का मौका देगी। इन संगठनों में युवाओं को न जाति के आधार पर, न आर्थिक स्थिति के आधार पर, न धर्म के आधार पर आगे बढ़ाया जायेगा। उनकी तरक्की का सिर्फ एक ही आधार होगा, उनका काम। उनकी पहचान उनके काम से होगी। और उनका काम ही उनका धर्म होगा।

मैं बहुत खुशी से आप को यह बात बताना चाहता हुँ कि पंजाब और उत्तराखण्ड के नौजवानों ने इन संगठनों के प्रधान स्वयम् चुनकर भारत के राजनैतिक इतिहास में एक क्रांतिकारी कदम उठाया है। किसी भी दूसरी पार्टी के संगठनों में इस तरह से युवाओं को अपने नेता चुनने का मौका नहीं दिया जाता है। यह क्रांति Youth Congress और NSUI के 500 युवा कार्यकर्ताओं के परिश्रम से हो पाई है। जो तीन–तीन महीनों के लिए दोनों प्रदेशों के घर–घर तक पहुँचे। इसी तरह अगले दो सालों में हर एक प्रदेश में चुनाव करवाये जायेंगे और इन्हीं के माध्यम से NSUI और Youth Congress के नये संगठन खड़े किये जायेंगे। हर दो साल, कांग्रेस पार्टी के लिए हम इन संगठनों द्वारा एक नई युवाओं की सेना तैयार करेंगे। हमारी आशा है कि इन्हें पार्टी आगे

बढ़ायेगी और बेशक, जहाँ से कमज़ोर है, वहाँ से चुनाव लड़ने का मौका देगी।

भारत के युवाओं पर मैं भरोसा करता हूँ। आने वाले समय में हम उनके और राजनीति के बीच खड़ी दीवार को तोड़ेंगे। मेरी आशा है कि हम भारत के युवाओं को एक ऐसी व्यवस्था देंगे जिससे वह अपना भविष्य अपने हाथों में ले पायें। एक ऐसा संगठन जहाँ उनकी आवाज़ बुलन्दी से उठेगी। एक ऐसा संगठन जो उनकी ऊर्जा और उनकी शक्ति को पहचानेगा, उसका देश सेवा में प्रयोग करेगा और उसे नई दिशा देगा।

आप सबको मेरा धन्यवाद। जय हिन्द।